ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 165-166

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

रिहन्द क्षेत्र की पर्यावरणीय समस्याएं, दुष्प्रभाव एवं संरक्षण के उपाय

1. डॉ0 अर्चना श्रीवास्तव
2. डॉ0 राजीव कुमार श्रीवास्तव

1. शिक्षा शास्त्र, 2. असि0 प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, श्री सुदृष्टि बाबा पी जी कालेज, सुदिष्टपुरी–रानीगंज, बलिया (उ0प्र0), भारत

Received-08.06.2024, Revised-15.06.2024, Accepted-21.06.2024 E-mail: archanasri2610@gmail.com

सारांश: *साठ के दशक में रिहन्द बांध की नींव रखते हुए, तब के राजनेताओं,खासकर तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को इस पुनीत कार्य के नतीजों का कोई शायद ही ख्याल आया होगा कि देश की ऊर्जा राजधानी खड़ी करने के जुनून में उत्तर प्रदेश के सोनभद्र (तत्कालीन मिर्जापुर जिला) और मध्य प्रदेश के सिंगरौली को वायु, जल, भूमि और मिट्टी के प्रदूषण तथा वहां के मूल निवासियों के तीन – तीन बार के विस्थापन जैसी मानवीय प्रताड़ना का घर बना दिया जाएगा। कोयला भंडार से परिपूर्ण इस क्षेत्र में विद्युत उत्पादन में इस्तेमाल होने वाली पानी के लिए 1960 के दशक में रिहंद नदी पर बांध बनाया गया था। आज रिहन्द परिक्षेत्र में 21000 मेगावाट की 10 थर्मल पावर प्लांट और नार्दन कोलफील्ड लिमिटेड (एन.सी.एल.) समेत निजी कंपनियों की 16 कोयला खदानें संचालित हैं। इन खदानों से लगभग 7 करोड मैट्रिक टन कोयला प्रतिवर्ष निकाला जाता है। एन.सी.एल. के चेयरमैन पीवकेव सिन्हा ने10 दिसंबर 2018 के एक कार्यक्रम में कहा था कि रिहंद परिक्षेत्र में 2021 तक 10 करोड़ 60 लाख मैट्रिक टन और 2023–24 के लिए 111 करोड़ पचास लाख मैट्रिक टन कोयला उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए क्षेत्र में मोरवा बाजार, पीटरवाह, सुलियरी, सिधौली, बरका और महुली आदि में कोल–ब्लॉक से उत्पादन करने की तैयारी चल रही है। देश के कुल कोयला भंडारों का 8% मध्यप्रदेश में है, जिसमें सिंगरौली सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र है। जिले के चितरंगी क्षेत्र में चकरिया और गुरार पहाड़ में सोने के अयस्क का पर्याप्त भंडार का पता चला है। 147 हेक्टेयर में सरकार ने खनन का निर्णय भी ले लिया है। प्रस्तुत शोध–आलेख में भारत के ऊर्जा की राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, रिहंद बांध परिक्षेत्र की पर्यावरणीय समस्याएं और उसके दुष्प्रभावों का आंकलन करते हुए वहां के पर्यावरण को संरक्षित करने के उपायों पर प्रकाश डाला गया है।*

कुंजीभूत शब्द– *रिहंद बांध परिक्षेत्र, राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण, ताप विद्युत संयंत्र, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, मृदा।*

रिहंद बांध, उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में पिपरी स्थित विंध्यन क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण इलाका है। जहां हरिजन आदिवासियों की बहुलता है और जीवन यापन का मुख्य आधार प्राकृतिक संपदा पर निर्भर रहा है। जब से इस क्षेत्र के भूगर्भ में कोयले के अटूट भंडार, वन संपदा एवं जल की प्रचुर मात्रा आदि का पता चला तो, 1957 में रेलवे लाइन बिछाने का कार्य शुरू किया गया। इसके तुरंत बाद सन 1963 में से निकाला जा रहा कोयला, पश्चिमी क्षेत्र में स्थित ताप विद्युत संयंत्रों को भेजा जाने लगा। विद्युत संयंत्रों की स्थापना, कोयला क्षेत्र के समीप ज्यादा मितव्ययी होने के कारण रिहंद बांध परिक्षेत्र को प्रमुख ऊर्जा केंद्र हेतु सर्वाधिक उपयुक्त पाया गया। ऊर्जा की राष्ट्रीय राजधानी बनाने के दृष्टिकोण से विकसित यहां का अधिकांश भाग मध्यप्रदेश के सिंगरौली तथा कुछ भाग उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में आता है।

रिहंद बांध परिक्षेत्र के ताप विद्युत संयंत्र की बिजली और कोयला बेचने से लगभग ৳5000 करोड़ का राजस्व पैदा होता है,परंतु विषमता देखिए नीति आयोग ने 2015 में देश के 20 अति पिछड़े जिलों में सिंगरौली और सोनभद्र को शामिल किया है।सन् 1991 में विश्व बैंक और नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन (एन.टी.पी.सी.) द्वारा गठित पर्यावरण आयोग ने पाया कि 90% स्थानीय समुदाय को यहां स्थापित विद्युत संयंत्रों तथा उद्योगों के कारण अनेक बार विस्थापित होना पड़ा है। इनमें से 35% लोगों को तीन बार विस्थापित होना पड़ा है। पिछले साल एस्सार, एन.टी.पी.सी., और रिलायंस पावर प्लांट के राखड़ बांध टूटने से 6 लोगों समेत दर्जनों मवेशी मारे गए और सैकड़ों एकड़ फसल बर्बाद हो गई और जमीन बंजर हो गई। 6अक्टूबर 2018 को एन.टी.पी.सी.,विंध्याचल का शाहपुर स्थित विशालकाय राखड़ बांध टूट गया था। जिससे 35 मैट्रिक टन राख, रिहंद बांध में समा गया जो नदी के पानी को जहरीला बना दिया। रेणुका नदी पर बने इस बांध से ही सोनभद्र और सिंगरौली जिले के लाखों लोगों के लिए पेयजल की व्यवस्था की गई है।

देश की ऊर्जा राजधानी के रूप में प्रसिद्ध रिहंद बांध परिक्षेत्र, गहरे पर्यावरणीय संकट की ओर बढ़ रहा है, जो जमीन कभी घने जंगलों, वन्यजीवों और भारी वर्षा के कारण बीहड़ और रहस्यमय मानी जाती थी, वह आज उजाड़ है। हवा में जहर घुल गया है और चारों तरफ कोयले की राख और धूल ने खेतों और पानी के स्रोतों को जहरीला बना दिया है। नदियां सूखती जा रही हैं और खेती की उपज आधी हो गई है।

पूरी आबादी, फेफड़े और पेट की तरह–तरह की बीमारियों से ग्रसित है। बच्चे, कई गंभीर बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण के निर्देश पर गठित विशेषज्ञ कोर कमेटी की रिपोर्ट भी यहां के मुसीबतों का कुछ ऐसा ही उल्लेख करती है। इस कमेटी के अनुसार इस क्षेत्र में 350 से अधिक उद्योग संचालित हैं। जिनमें 10 थर्मल पावर प्लांट, 16 कोयला खदानें 10 रसायन कारखानें, 8 विस्फोटक कारखाने, 309 क्रेशर और स्टील सीमेंट एवं एलमुनियम के एक –एक उद्योग हैं। इनसे करीब 45 लाख टन कचरा हर साल उत्सर्जित होता है।

जिसमें लगभग 35 लाख टन तो सिर्फ कोयले की राख है। 21 हजार मेगा वाट बिजली उत्पादन करने के लिए साल भर में 10.3 लाख टन कोयले की जरूरत होती है इतनी बड़ी मात्रा में कोयले की खपत से हर साल 3.5 लाख टन राख पैदा हो रहा है, जिसका सही तरीके से निस्तारण नहीं हो पाता है। इसके अलावा 10 लाख टन से अधिक लाल कीचड़ रेड–मड तथा अन्य रसायन उत्सर्जित

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

होते हैं। परंतु इनके निस्तारण के लिए उचित प्रबंध नहीं होने से 20 लाख टन से अधिक कचरा, सिंगरौली – रिहंद परिक्षेत्र में खुले में फेंका जा रहा है।

पर्यावरणीय प्रदूषण का स्वरूप–

वायु प्रदूषण– रिहन्द बांध परिक्षेत्र में 24 घंटे छाए रहने वाले प्रदूषकों के सूक्ष्म तत्वों व फ्लाई ऐश के कारण आम नागरिकों को सांस लेना भी भारी हो रहा है। आलम यह है कि रिहंद बांध, सिंगरौली व अनपरा परिक्षेत्र की एयर क्वालिटी इन्डेक्स 200 से अधिक ही बनी रहती है। वायु में कार्बन डाई ऑक्साइड, सल्फरडाइऑक्साइड, कार्बन, सल्फर और लेड आदि विषाक्त तत्वों की अधिकता के कारण, क्षेत्र में सांस से जुड़ी बीमारियां तेजी से फैल रही हैं और नागरिकों को अपना शिकार बना रही हैं।

जल प्रदूषण– औद्योगिक व रिहायशी अपशिष्टों के कारण पूरे रिहंद बांध के परिक्षेत्र का भूगर्भ जल स्रोत जहरीला हो चुका है। एन.जी.टी. के निर्देश पर कई ख्यातिलब्ध संस्थाओं ने क्षेत्र में पानी की जांच की है, पानी में मरकरी, कैडमियम, आर्सेनिक, फ्लोराइड, कार्बन और सल्फर आदि रसायन मानक से कई गुना अधिक पाए गए हैं। हजारों लोग द्वारा, इस प्रदूषित जल का सेवन करने से कई लाइलाज बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। लगातार बढ़ता जल प्रदूषण लोगों में बीमारियां पैदा कर रहा है। लोग विशेषकर किडनी की बीमारियों और पेट संबंधी रोगों से पीड़ित हो रहे हैं।

मृदा प्रदूषण– ताप विद्युत परियोजनाओं के अपने ऐश पांड को मानक के अनुरूप दुरुस्त नहीं करने के कारण, क्षेत्र में कई स्थानों पर बिखरी रॉख, सहज ही देखी जा सकती है।इससे कृषि योग्य भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट हो रही है। फसलों में भी जहरीले रसायन प्रवेश कर रहे हैं। इसका नागरिकों के स्वास्थ्य पर व्यापक प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। रिहंद बांध परिक्षेत्र में प्रदूषण बढ़ने का मुख्य कारण खुले में कोयले व रॉख का परिवहन है। पिछले 1 वर्ष से हाईवे पर भी रॉख का परिवहन शुरू कर दिया गया है। हालांकि इस संबंध में एन.जी.टी. ने बाकायदा गाइडलाइन निर्धारित किया है,इसके बावजूद, मानक का अनुपालन नहीं हो पा रहा है। जल प्रदूषण के कारण रिहंद–डैम सहित नदी नालों में रॉख सहित अन्य अपशिष्टों का सीधे प्रवाह है। वैसे तो अपशिष्टों के निस्तारण के लिए कई मानक तय किए गए हैं, लेकिन ज्यादातर परियोजनाओं में इसकी अवहेलना हो रही है।

बीमारियों की भयावहता– भीषण जल प्रदूषण के कारण, रेणुका पार इलाके में कुपोषण व अपंगता संबंधी मामले बढ़ रहे हैं। क्षेत्र के 70% से अधिक महिलाएं व बच्चे विभिन्न बीमारियों से ग्रसित हैं, साथ ही त्वचा संबंधी मामले भी निरंतर बढ़ रहे हैं। कम उम्र में ही दांत टूटना, असमय बालों का सफेद होना, शारीरिक रूप से कमजोर होना और मानसिक बीमारियां लगातार बढ़ रही हैं। टी.बी. , कैंसर ,अस्थमा, कुपोषण ,हड्डियों का कमजोर होना, अपंगता इत्यादि बीमारियां भी हो रही है। रिहंद के किनारे बसे मकरा, सिंदूर, बेलवाहद जैसे गांव मच्छर जनित बीमारियों से जूझते रहते हैं।

निष्कर्ष– रिहन्द बांध परिक्षेत्र में जानलेवा स्तर तक पहुंच चुके प्रदूषण के लिए, विद्युत परियोजना के प्रबंधकों के साथ ही प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और जिला प्रशासन कम जिम्मेदार नहीं है। उनकी ओर से अपनी जिम्मेदारियों का भली–भांति निर्वहन नहीं किया गया है। रही सही कसर कोयला व रॉख परिवहन में लगे वाहनों की जांच में उदासीनता बरत कर परिवहन विभाग ने पूरी कर दी है। रॉख से खाक होती जिंदगी को बचाने के लिए, कमेटी ने कुछ सुझाव भी दिए हैं– पीने के पानी का किसी भी तरह से उद्योगों में इस्तेमाल नहीं हो। बांध के समीप सभी राखड़ बांध हटाए जाएं, कोयले की ढुलाई किसी भी स्थिति में सड़क मार्ग से नहीं हो ।सिंगरौली और सोनभद्र जिला निकाय, 'वाटर ट्रीटमेंट प्लांट' लगाएं। वायु प्रदूषण को कम करने के लिए 'एंवियेंट क्वालिटी सिस्टम' लगातार सक्रिय रखने जैसे महत्वपूर्ण सुझाव शामिल हैं। परंतु बीते 4 सालों में, इन सुझाव पर कोई अमल नहीं हुआ है। जानकारों का मानना है कि प्रदूषण पर प्रभावी रोक का सबसे सहज उपाय है– एन.जी.टी. के दिशा निर्देशों का सख्ती के साथ अनुपालन सुनिश्चित कराया जाए। हालांकि रिहन्द बांध परिक्षेत्र के सम्पूर्ण प्रदूषण को समाप्त तो नहीं किया जा सकता, मगर भावी पीढ़ी के लिए उन पर अंकुश अवश्य लगाया जा सकता है और पर्यावरण में सुधार कर एक बेहतर जीवन की कामना का प्रयास तो अवश्य ही किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बदहाली के आंसू रोता नेहरू का स्विट्जरलैंड –बी.बी.सी. न्यूज।
https://www.bbc.com2012/10>2010
2. देश को रोशन करने वाले सोनभद्र में बीमारी और मौत।
https://www.bbc.com>Uttar -pradesh-election>up…
3. नाराज हुआ रिहंद, तो आधे भारत में हो जाएगा अंधेरा।
https://www.patrika.com>over polluted rihand dam/…
4. सिंगरौली पार्ट– 2 राख खाते हैं, राख पीते हैं ,राख में जीते हैं। 24 अक्टूबर, 2017.
https://gaon connection.com>Read>देश
5. अमर उजाला, 15 जून, 2017 पृष्ठ –9.
6. रिहंद का स्याह सच, सर्वोदय प्रेस सर्विस, 12 अक्टूबर, 2018.
https://2.www.spsmedia.in/dam-and-displacement/the-truth-of-singrauli-rihand-dam/

*****